"उत्तराखंड गाथा सामजिक पहचान निर्माण निरंतरता एवं परिवर्तन" शीर्षक पर प्रोफ़ेसर शेखर पाठक के व्याख्यान की रिपोर्ट

दिनांक : 28/02/2026
आयोजक : राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय बेरीनाग
संयोजक : इतिहास विभाग, सह संयोजक : IQAC प्रकोष्ठ

दिनांक 28/02/2026 को राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय के इतिहास विभाग एवं सह संयोजक IQAC प्रकोष्ठ के तत्वावधान में महाविद्यालय के बहुउद्देशीय भवन के सभागार में पूर्व नियोजित कार्यक्रम के तहत प्रातः 10:30 मिनट से पद्म श्री प्रोफ़ेसर चन्द्र शेखर पाठक द्वारा "**उत्तराखंड गाथा सामजिक पहचान निर्माण निरंतरता एवं परिवर्तन**" शीर्षक व्याख्यान दिया गया।

प्रो शेखर पाठक कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल के इतिहास विभाग में विभागाध्यक्ष के रूप में सेवाएँ दे चुके हैं, 1980 के दशक में छात्र जीवन में अध्ययनरत रहते हुये उन्होंने भारत और उत्तराखंड के सामाजिक बदलावों के दौर में खुद को संबद्ध करते हुये युवाओं के साथ उत्तराखंड के ग्रामीण जीवन के व्यापक अध्ययन की दृष्टि से अस्कोट-आराकोट यात्रा आरम्भ की। प्रत्येक दशक में होने वाली लगभग 1200 किलोमीटर की इस पैदल यात्रा का 2024 पचासवां वर्ष था। इन यात्राओं का उद्देश्य मध्य हिमालय-पहाड़ों के ग्रामीण जीवन के विविध आयामों संघर्षों को समझने का उपक्रम था, जो बीते पचास वर्षों में प्रत्येक दशक में होती आ रही है। प्रो पाठक सम्पादित पहाड़ PAHAR **(PEOPLES ASSOCIATION OF HILL AREA RESEARCH)** पत्रिका एवं संस्था के विभिन्न प्रकाशनों ने उत्तराखंड के समाज संस्कृति जीवन के संघर्षों पर विस्तृत दस्तावेज तैयार किये हैं जो किसी भी हिमाल-पहाड़ प्रेमी को समझने के विस्तृत साहित्य के रूप में प्रकाशित एवं ऑफिसियल वेबसाईट PAHAR.ORG में डिजिटल माध्यम से उपलब्ध हैं।

अपने व्याख्यान में उन्होंने उत्तराखंड के भूगर्भीय,भौगौलिक,सामाजिक सांस्कृतिक,ऐतिहासिक, धार्मिक विभिन्न पक्षों पर विस्तार से बात रखी इस अवसर पर महाविद्यालय के सभागार में प्राचार्य प्रो बिश्व मोहन पाण्डेय, विभिन्न संकाय के प्राध्यापक विद्यार्थी,बाहर से आये आगंतुकों, पत्रकार, प्रबुद्धजनों, महाविद्यालय के शैक्षणिक शिक्षनेत्तर कार्मिकों के समक्ष स्लाइड के माध्यम से प्रस्तुत किये व्याख्यान में अतीत का खाका खींचा

प्रो. शेखर पाठक ने अपने व्याख्यान में उत्तराखंड के समाज, संस्कृति और पहचान के निर्माण की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया। उनके अनुसार उत्तराखंड की पहचान केवल भौगोलिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक अनुभवों से निर्मित हुई है। उत्तराखंड का इतिहास अत्यंत प्राचीन और विविधतापूर्ण रहा है। यहाँ विभिन्न जातीय समूहों, जनजातियों और संस्कृतियों का मेल देखने को मिलता है। व्याख्यान में बताया गया कि उत्तराखंड की सामाजिक पहचान कई तत्वों से मिलकर बनी है पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहाँ का जीवन कठिन लेकिन सामुदायिक सहयोग पर आधारित रहा। लोकगीत, मेले, त्योहार और परम्पराओं ने लोगों की सामूहिक पहचान को मजबूत किया है। उन्होंने मनी आर्डर इकोनोमी व्यवस्था शब्द को विस्तार से समझाते हुए पहाड़ की आर्थिकी और पलायन अपने अपने विचार रखे।

अपने व्याख्यान के अंत में विद्यार्थियों, जिज्ञासुओं के प्रश्नों का उन्होंने विस्तार से उत्तर दिया लगभग 2 घंटे से अधिक चला यह व्याख्यान महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो बिश्व मोहन पांडे जी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हुआ। **प्रस्तुत प्रतिवेदन के साथ कार्यक्रम की महत्वपूर्ण झलकियाँ निम्न हैं।**

स्वर्ण
जयन्ती समारोह

सधन्यवाद

दिनांक 28/02/2026

डॉ सुनील पन्त

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर प्रभारी, इतिहास विभाग